

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अरण्यकाण्डे

॥ सप्तदशः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बुगभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ सप्तदशः सर्गः ॥

श्रीरामस्याश्रमे शूर्पणखाया आगमनं तस्य परिचयं ज्ञात्रा स्वात्नः  
परिचयं दत्त्वाहहानं भार्यारूपतया ग्रहीतुं तं प्रति तस्या  
अनुरोधः

कृताभिषेको रामस्तु सीता सौमित्रिरेर च।  
तस्माद् गोदाररीतीरां ततो जग्मुः स्वमाश्रमम् ॥ 3.17.1 ॥

आश्रमं तमुपागम्य राघवः सहलम्बुगः।  
कृत्रा पौर्राहिकं कर्म पर्णशालामुपागमत् ॥ 3.17.2 ॥

उर्रास सुथितस्तत्र पूज्यमानो महर्षिभिः।  
स रामः पर्णशालायामासीनः सह सीतया ॥ 3.17.3 ॥

रिरराज महाबाहृश्चिद्रया चन्द्रमा इर।  
लम्बुगेन सह ब्रात्रा चकार रिरिधाः कथाः ॥ 3.17.4 ॥

तदासीनस्य रामस्य कथासंसक्तचेतसः।  
तं देशं राक्सी काचिदाजगाम यदृच्छया ॥ 3.17.5 ॥

सा तु शूर्पणखा नाम दशग्रीरस्य रक्सीसः।  
भगिनी राममासाद्य ददर्श त्रिदशोपमम् ॥ 3.17.6 ॥

दीप्रास्यं च महाबाहृं पद्मपत्रायतेक्कणम्।  
गजरिक्त्रान्तगमनं जटामगुलधारिणम् ॥ 3.17.7 ॥

সুকুমারং মহাসত্ত্বং পার্থিরর্যঞ্জনান্নিতম্।  
রামমিন্দীররশ্যামং কন্দর্পসদৃশপ্রভম্ ॥ 3.17.8 ॥

বভূরেন্দ্রোপমং দৃষ্টরা রাক্ষসী কামমোহিতা।  
সুমুখং দুর্মুখী রামং বৃত্তমধ্যং মহোদরী ॥ 3.17.9 ॥

রিশালাক্ষং রিরূপাক্ষী সুকেশং তাম্রমূর্ধজা।  
প্রিয়রূপং রিরূপা সা সুস্বরং ভৈররস্বনা ॥ 3.17.10 ॥

তরুণং দারুণা বৃদ্ধা দক্ষিণং রামভাষিণী।  
ন্যাযবৃত্তং সুদুর্ভূতা প্রিয়মপ্রিয়দর্শনা ॥ 3.17.11 ॥

শরীরজসমারিষ্টা রাক্ষসী রামমব্রবীৎ।  
জটী তাপসরেষণে সভার্যঃ শরচাপধৃক্ ॥ 3.17.12 ॥

আগতস্তুমিমং দেশং কথং রাক্ষসসেরিতম্।  
কিমাগমনকৃত্যং তে তত্ত্বমাখ্যা তুমর্হসি ॥ 3.17.13 ॥

এরমুক্তস্তু রাক্ষস্যা শূর্ণণখ্যা পরন্তপঃ।  
ঋজুবুদ্ধিতয়া সর্ষমাখ্যা তুমুপচক্রমে ॥ 3.17.14 ॥

আসীদ্ দশরথো নাম রাজা ত্রিদশরিক্রমঃ।  
তস্যাহমগ্রজঃ পুত্রো রামো নাম জনৈঃ শ্রুতঃ ॥ 3.17.15 ॥

ভ্রাতাযং লক্ষ্মণো নাম যরীযান্ মামনুব্রতঃ।  
ইযং ভার্যা চ রৈদেহী মম সীতেতি রিশ্রুতা ॥ 3.17.16 ॥

নিযোগাৎ তু নরেন্দ্রস্য পিতুর্মাতুশ্চ যন্ত্রিতঃ।  
ধর্মার্থং ধর্মকাজক্ষী চ বনং রস্তুমিহাগতঃ ॥ 3.17.17 ॥

ৎরাং তু রেদিতুমিচ্ছামি কস্য ত্বং কাসি কস্য রা।  
ৎরং হি তারন্যনোজ্ঞাসী রাক্ষসী প্রতিভাসি মে ॥ 3.17.18 ॥

ইহ রা কিন্নিমিত্তং ত্ৰমাগতা ব্রুহি তত্ত্বতঃ।  
সাব্রবীদ্ রচনং শ্ৰুৎরা রাক্ষসী মদনার্দিতা ॥ 3.17.19 ॥

শ্ৰযতাং রাম তত্ত্বার্থং বক্ষ্যামি রচনং মম।  
অহং শূৰ্পণখা নাম রাক্ষসী কামরূপিণী ॥ 3.17.20 ॥

অরণ্যং রিচরামীদমেকা সৰ্ভভযঙ্করা।  
রারণো নাম মে ভ্রাতা যদি তে শ্রোত্রমাগতঃ ॥ 3.17.21 ॥

বীরো রিশ্রবসঃ পুত্রো যদি তে শ্রোত্রমাগতঃ।  
প্রবৃদ্ধনিদ্রশ্চ সদা কুম্ভকর্ণো মহাবলঃ ॥ 3.17.22 ॥

রিভীষণস্ত ধর্মায়া ন তু রাক্ষসচেষ্টিতঃ।  
প্রখ্যাতবীর্যো চ রণে ভ্রাতরৌ খরদূষণৌ ॥ 3.17.23 ॥

তানহং সমতিক্রান্তা রাম ত্ৰা পূর্দর্শনাৎ।  
সমুপেতাশ্মি ভারেন ভর্তারং পুরুষোত্তমম্ ॥ 3.17.24 ॥

অহং প্রভারসম্পন্না স্বচ্ছন্দবলগামিনী।  
চিরায ভর ভর্তা মে সীতযা কিং করিষ্যসি ॥ 3.17.25 ॥

রিকৃতা চ রিরূপা চ ন সেযং সদৃশী তর।  
অহমেরানুরূপা তে ভার্যারূপেণ পশ্য মাম্ ॥ 3.17.26 ॥

ইমাং রিরূপামসতীং করালাং নির্ণতোদরীম্।  
অনেন সহ তে ভ্রাত্ৰা ভক্ষযিষ্যামি মানুষীম্ ॥ 3.17.27 ॥

ততঃ পর্তশৃঙ্গাণি বনানি রিরিধানি চ।  
পশ্যন্ সহ মযা কামী দণ্ডকান্ রিচরিষ্যসি ॥ 3.17.28 ॥

ইত্যেরমুক্তঃ কাকুৎস্থঃ প্রহস্য মদিরেক্ষণাম্।  
ইদং রচনমারেভে রত্নুং বাক্যরিশারদঃ ॥ 3.17.29 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীযে আদিকার্যে অরণ্যকাণ্ডে সপ্তদশঃ সর্গঃ ॥